प्रकाशन की तिथि 01.02.2019

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 42 अंक 2

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 500 रुपये

फरवरी 2019 विक्रम सम्वत् 2075 माघ - फाल्गुन

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

'पृथिवी पर श्रेष्ठ धर्म वैदिक धर्म और श्रेष्ठ संगठन आर्यसमाज'

ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति का अस्तित्व सत्य है। किसी भी विषय में सत्य केवल एक ही होता है। जिस प्रकार दो व दो को जोड़ने से चार होता है, कुछ कम व अधिक नहीं हो सकता इसी प्रकार ईश्वर, जीव, प्रकृति, सृष्टि, धर्म, समाज, मानवीय आचार व विचार आदि सिद्धान्त व मान्यतायें भी भिन्न-भिन्न न होकर सर्वत्र एक समान ही होनी चाहिये। **यदि यह पूछा जाये कि वेद पर आधारित वैदिक धर्म और आर्यसमाज संगठन की प्रमुख विशेषता क्या है तो इसका एक वाक्य में उत्तर है कि यह धर्म व संगठन सत्य पर आधारित है। दूसरा उत्तर यह है कि वैदिक धर्म व आर्य समाज का संगठन प्राणीमात्र के हित व कल्याण के लिए हैं। यह कभी किसी के अकल्याण की बात न सोचता है और न ही करता है। एक अन्य उत्तर यह भी हो सकता है कि यह दोनों ज्ञान पर आधारित है तथा अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीति, रूढ़ि, मिथ्या परम्परा आदि से पूर्णतः रहित हैं।** आर्यसमाज की मान्यता है कि वेद मन्त्रों के अर्थ वही स्वीकार्य होंगे जो सत्य हों व मानव सहित प्राणीमात्र के हित के लिए हों। यदि कहीं कोई भ्रान्ति हो तो उसे इस कसौटी पर कस कर संशोधित कर लेना चाहिये। अन्य मतों, सम्प्रदायों वा धर्मों में सत्य, तर्क व युक्ति को वैदिक धर्म की भांति महत्त्व नहीं दिया जाता। तर्क व युक्ति से सिद्ध बातें ही सत्य हुआ करती हैं। इसी से ज्ञान की उन्नति व अज्ञान की निवृत्ति होती है और यही मनुष्य के सुख व उन्नति का मुख्य कारण व आधार है।

वैदिक धर्म का आरम्भ कब, किसने व क्यों किया? इस प्रश्न पर विचार करना भी समीचीन है। इसका उत्तर है वैदिक धर्म का आरम्भ चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के ज्ञान से सृष्टि के आरम्भ में हमारे पहली पीढ़ी के ऋषियों ने किया। यह सभी ऋषि ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का साक्षात व यथार्थ ज्ञान रखने के साथ-साथ वेदों के पूर्ण वेत्ता व विद्वान थे। वेदों में जो मन्त्र व उनमें अलौकिक ज्ञान है वह किसी मनुष्य व ऋषि द्वारा रचित, निर्मित व उत्पन्न नहीं है अपितु यह वेद, इसके मन्त्र व ज्ञान इस सृष्टि के रचयिता व संचालक ईश्वर का निज ज्ञान है जो वह सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न आदि मनुष्यों, स्त्री व पुरूषों को, उनके कल्याणार्थ देता है। **चार वेदों का यह ज्ञान सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ ईश्वर ने सृष्टि के आदि में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा की आत्माओं में प्रेरणा द्वारा स्थापित किया था।** ईश्वर ने ही जीवात्मा को मनुष्य शरीर दिये, इन शरीरों में व्यवहार के लिए पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां व बुद्धि आदि प्रदान करने सहित सृष्टि के आरम्भ में वेदमन्त्रों का उच्चारण, परस्पर संवाद एवं व्यवहार करना भी सिखाया है। तर्क व विवेचन से यह सिद्ध है कि यदि ईश्वर इस सृष्टि के आदि मनुष्यों को वेदों का ज्ञान न देता, जिससे कि वह परस्पर संवाद आदि कर सके और सत्य व असत्य में भेद कर सकें, तो उनका जीवन व्यतीत करना संभव नहीं था। मान लीजिए हमें बोलना नहीं आता और हमारे आसपास के अन्य मनुष्यों को भी नहीं आता। हममें ज्ञान भी नहीं है। ऐसी स्थिति में हम क्या कोई व्यवहार कर सकते हैं?इसका उत्तर है कि हम परस्पर किसी प्रकार का कोई व्यवहार नहीं कर सकते। व्यवहार के लिए किसी न किसी भाषा सहित उठने, बैठने, चलने, फिरने, सोचने, समझने, खाद्य-अखाद्य पदार्थों का ज्ञान, भोजन की विधि, मल-मूत्र विसर्जन आदि सभी आवश्यक क्रियाओं का ज्ञान आवश्यक है। अतः सृष्टि की रचना के बाद अमैथुनी सृष्टि में मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही उनको ईश्वर से ज्ञान मिलना तर्क संगत है। यही ज्ञान उसे परमात्मा से मिलता है और इसी का नाम वेद है।

परमात्मा प्रदत्त इसी ज्ञान से प्रथम चार ऋषियों से अध्ययन, अध्यापन, शिक्षा, प्रचार, प्रवचन व उपदेश की परम्परा आरम्भ हुई और सभी लोग ज्ञान सम्पन्न हुए। यह वेद ज्ञान आज भी अपने मूल स्वरूप में सुरक्षित है। महाभारत के बाद यह ज्ञान लुप्त हो गया था जिसके कारण देश व विश्व में अज्ञान का घोर अन्धकार फैला और अज्ञान पर आधारित अनेक मत व मतान्तर उत्पन्न हुए। महर्षि दयानन्द, जो कि वेदों के उच्च कोटि के मर्मज्ञ विद्वान थे, उन्होंने चारों वेदों की परीक्षा कर घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। वेद का पढ़ना व पढ़ाना तथा सुनना व सुनाना सभी मनुष्यों वा आर्यों का परम धर्म है। अपनी इस घोषणा को उन्होंने सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि अनेक ग्रन्थों को लिखकर पुष्ट किया। उन्होंने वेदों के सभी मन्त्रों का भाष्य करना आरम्भ किया था। ऋग्वेद आंशिक व यजुर्वेद का सम्पूर्ण भाष्य उन्होंने किया है। आकस्मिक मृत्यु के कारण वह वेदों के भाष्य को पूर्ण नहीं कर सके। उन्होंने जितने ग्रन्थ लिखे और उनकी जो शिक्षायें, उपदेश, पत्र, पुस्तकें, शास्त्रार्थों के विवरण आदि उपलब्ध हैं, उनसे वैदिक धर्म का विस्तृत सत्य स्वरूप प्रकट होता है। इस पर विचार करने पर यह पूर्व व पश्चात प्रचलित सभी धर्मों में श्रेष्ठ सिद्ध होता है। अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने प्रमुख सभी मतों का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है जो वेद को विश्व के सभी मनुष्यों के धर्म की उनकी मान्यता को पुष्ट करता है।

वेद धर्म की पहली विशेषता तो यह है कि वेद की सभी मान्यताएँ तर्क व युक्ति की कसौटी पर सत्य सिद्ध होती हैं। वेद, तर्क व युक्तियों से डरता नहीं अपितु उनका स्वागत करता है। वेदों की सभी मान्यतायें ज्ञान व विज्ञान की कसौटी पर भी सत्य सिद्ध हैं। ईश्वर, जीव व प्रकृति का जो स्वरूप वेदों में उपलब्ध होता है वह अपूर्व व आज भी सर्वोत्तम हैं एवं विवेक पर आधारित है। अन्य मतों में यह बात नहीं है। वेदाधारित ईश्वरोपासना वा पंचमहायज्ञ विधि में भी मुनष्यों के सर्वोत्तम कर्त्तव्यों का विधान किया गया है जिससे मनुष्य की व्यक्तिगत व सामाजिक उन्नति होने के साथ सभी प्राणियों का कल्याण होता है। कर्म-फल सिद्धान्त भी वेद प्रदत्त ज्ञान के अर्न्तगत ही सत्य सिद्धान्त है जिसके अनुसार मनुष्य जो शुभ व अशुभ कर्म करता है उसका फल उसे जन्म व जन्मान्तरों में अवश्य ही भोगना होता है! अशुभ कर्मों का त्याग व शुभ कर्मों को करके तथा साथ ही वेदविहित ईश्वरोपासना, यज्ञादि कार्य, मातृ-पितृ-आचार्यों की सेवा,

शेष पृष्ठ 2 पर...

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

-आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्पूर्ण जीवन पर दृष्टिपात करने से व्यवहार के दो पूरक पक्ष सामने आते हैं। एक सैद्धान्तिक पक्ष और दूसरा व्यावहारिक पक्ष। सैद्धान्तिक पक्ष बुद्धि प्रधान है तो व्यावहारिक पक्ष हृदय प्रधान। उनका जीवन बुद्धि की प्रमुखता और हृदय की प्रधानता के अद्भुत सन्तुलन को प्रदर्शित करता है। सैद्धान्तिक पक्ष का अर्थ यह नहीं है कि पुस्तकों में अथवा व्याख्यानों में जो शास्त्रीय सिद्धान्त स्वामी जी ने लिखे अथवा कहे हैं वे व्यवहार में नहीं हैं अपितु उन पुस्तकीय और व्याख्यान प्रदत्त कथनों की आश्चर्यजनक सुदृढ़ता का व्यवहार उनके जीवन में दिखलायी पड़ता है। व्यावहारिक पक्ष में उनकी उदारता, सहिष्णुता, उदात्तता, महनीय चरित्रता का कोई सानी नहीं है। सुकुमारता के साथ सुशीलता का, मानसिक मृदुता के साथ चारित्रिक दृढ़ता का अपार वैभव के साथ विपुल वैराग्य का, सौन्दर्य के साथ धर्म का मणिकाञ्चन योग संसार के महापुरुषों में विरल है। स्वामी जी में यह विरलता सर्वांग रूप में दिखायी देती है। सन्तुलन जीवन की आत्मा है। सन्तुलन के बिगड़ने पर जीवनरूपी आत्मा निष्प्राण हो जाती है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में जब तक सन्तुलन रहता है तब तक ये तत्त्व जीवन को न केवल उपयोगी बनाते हैं अपितु अपार दैवी सम्पदा से सम्पन्न कर देते हैं, परन्तु इनमें से किसी एक का भी सन्तुलन बिगड़ने से जीवन डाँवाडोल हो जाता है। धर्म के असन्तुलन से उन्माद, अधर्म के असन्तुलन से भ्रष्टाचार, काम के असन्तुलन से व्यभिचार और मोक्ष के असन्तुलन से पलायनवाद का जन्म होता है। आज संसार में यही कुछ दिखायी पड़ रहा है।

स्वामी जी के जीवन में अनेक ऐसी घटनायें आती हैं जिनसे उक्त बातों का निवारण हो जाता है। एक ओर स्वामी जी का एक साधु के द्वारा प्रतिदिन गालियाँ देने पर भी न केवल मौन रहकर सहना अपितु किसी भक्त के द्वारा फलों का टोकरा उस गाली देने वाले साधु के पास यह कहकर भिजवाना कि गालियाँ देने से आपकी वाणी का क्षरण होता होगा इन फलों के रस से आपको शक्ति मिलेगी, इनका आप सेवन करें। यह स्वामी जी की सहनशीलता के साथ संन्यासी के गरिमा पूर्ण कर्त्तव्य का भी स्मरण कराता है और दूसरी ओर कर्णवास में राव कर्णसिंह के द्वारा तलवार लेकर स्वामी जी पर वार करना तथा उत्तर में स्वामी जी द्वारा कर्णसिंह की तलवार को एक ही झटके में छीनकर पृथ्वी पर टिकाकर दो टुकड़े करना उनकी निडरता के साथ साहस और वीरता का उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। शक्तिशाली दुस्साहसी राव के सामने स्वामी जी का निर्भीकता से न केवल सामना करना अपितु उसकी तलवार तोड़कर दर्प को चकनाचूर करना, संन्यास धर्म के साथ सिद्धान्त पक्ष और व्यवहार पक्ष की अद्भुत कुशलता से रक्षा करना, सन्तुलन का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है। राव पर प्रति प्रहार न करके स्वामी जी अपने दयानन्द नाम को अन्वर्थक और सार्थक भी करते हुए दिखायी पड़ते हैं। और प्रतिदिन गालियाँ देने वाले साधु को फलों से भरा टोकरा भिजवा कर दया की मूर्ति का अद्भुत प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। स्वामी जी का व्यक्तित्व प्रभावशाली मनुष्यों को पाठ पढ़ाना था और निर्बल सज्जन मानवों के साथ दया और उदारता का व्यवहार करना था। एक नहीं इस प्रकार की अनेक घटनायें स्वामी जी के जीवन में आती हैं।

शेष पृष्ठ 1 का...

परोपकार व विद्यायुक्त कर्मों को करने से ही मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त होता है। यह वैदिक धर्म की विशेषता व युक्तिसंगत सिद्धान्त है।

आर्यसमाज वेदों के सत्य ज्ञान को संसार में फैलाने के लिए स्थापित किया गया एक संगठन है जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 10 अप्रैल सन् 1875 को मुम्बई में की थी। इस संगठन की स्थापना का मुख्य उद्देश्य महर्षि दयानन्द के समय में वैदिक धर्म का संगठित रूप से प्रचार करना था और उनके बाद भी ***'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'*** (संसार को श्रेष्ठ बनाओं) के लक्ष्य की प्राप्ति तक संसार में वेदों का प्रचार अबाधित रूप से हो, यह मुख्य प्रयोजन था। महर्षि दयानन्द ने पृथिवी के सभी मनुष्यों के कल्याणार्थ वेदों की सार्वभौमिक व सार्वजनीन मान्यताओं व सिद्धान्तों के प्रचार के लिए अनेक ग्रन्थों की रचना की जिनमें सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, ऋग्वेद आंशिक व यजुर्वेद सम्पूर्ण वेदभाष्य आदि ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थों के अनेक भाषाओं में अनुवाद भी उपलब्ध हैं। ग्रन्थ लेखन के इस स्थाई कार्य के अतिरिक्त महर्षि दयानन्द ने देश के प्रमुख स्थानों पर जाकर वैदिक विचारधारा का प्रचार किया और सभी मतों को अपनी–अपनी धर्म व समाज विषयक मान्यताओं पर शंकाओं का निवारण करने का अवसर दिया। प्रतिपक्षी मतों के आचार्यों को उन्होंने शंका समाधान का अवसर देने के साथ शास्त्रार्थ करने की चुनौती भी दी और अनेक प्रमुख मतों के विद्वानों से शास्त्रार्थ कर वैदिक मत की श्रेष्ठता, ज्येष्ठता, ज्ञानसम्पन्नता व सत्यता को प्रतिपादित व सम्पादित किया। इसके साथ ही महर्षि दयानन्द ने उदयपुर, शाहपुर, जोधपुर आदि अनेक देशी रियासतों के शासकों को भी अपना शिष्य व अनुगामी बनाया और वहां वैदिक मत की स्थापना में आंशिक सफलतायें प्राप्त कीं। अनेक पादरी व मुस्लिम विद्वान भी उनकी मित्र मण्डली में थे जो उनकी सभी मतों के अनुयायियों के प्रति सदाशयता के उदाहरण हैं। स्वामी दयानन्द जी ने अनेक अवसरों पर हिन्दी के प्रचार व प्रसार सहित गोरक्षा आदि आन्दोलनों का सूत्रपात भी किया जबकि ऐसे कार्य व उदाहरण पूर्व इतिहास में कहीं उपलब्ध नहीं होते। इस प्रकार से प्रचार करते हुए उन्होंने वेदों के ज्ञान को फैलाकर विश्व के मनुष्यों को प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारी वैदिक धर्म की स्थापना व विश्व समुदाय में इसकी स्वीकृति में यथाशक्ति योगदान किया।

ईश्वर इस सृष्टि के सभी मनुष्यों व पूर्वजों का आदि गुरू है। इस सृष्टि में अब तक उत्पन्न हुए सभी आचार्य, विद्वान व ऋषि–मुनि ईश्वर के शिष्य सिद्ध होते हैं जिन्होंने अपने–अपने काल में ईश्वर द्वारा आदि ऋषियों को प्रदत्त वेद ज्ञान को ही जाना, समझा व प्रचारित किया। जिस प्रकार सृष्टि के आदि में ईश्वर अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को चार वेदों का उपदेश देने से उनका गुरू व चारों ऋषि ईश्वर के शिष्य सिद्ध होते हैं, उसी प्रकार से चार ऋषियों से आरम्भ आचार्य–शिष्य परम्परा के अनुसार उनके बाद के सभी आचार्य उसी ईश्वरीय ज्ञान के प्रचारक व प्रसारक सिद्ध होते हैं। सच्चा आचार्य माता–पिता के समान होता है। इस प्रकार से संसार में जितने भी सच्चे उपदेशक, ज्ञानी व ऋषि आदि हुए हैं वह–वह ज्ञानदाता व ज्ञानप्रसारक होने से अपने शिष्यों के मातृ–पितृ तुल्य ही रहे हैं। उसी परम्परा व ज्ञान प्रवाह का परिणाम ही आज का अन्यान्य विषयक ज्ञान–विज्ञान है। यदि उन्होंने वैदिक ज्ञान को सुरक्षित रखते हुए उपदेश आदि से उसका देश–देशान्तर में प्रचार न किया होता तो आज का मानव ज्ञान–विज्ञान सम्पन्न न हो पाता। संसार के सभी मनुष्यों का कर्त्तव्य है कि वह ज्ञान विज्ञान का क्षेत्र हो या मत–मतान्तरों का, उनकी सभी मान्यताओं वा सिद्धान्तों की परीक्षा कर उनमें विद्यमान सत्य को ही अपनायें और मिथ्या का त्याग करें। मत–मतान्तरों में निहित अज्ञान व भ्रम की बातें कि जिससे मनुष्यों में समरसता में बाधा पहुंचती है, उनका त्याग करें। सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग ही **वैदिक धर्म व आर्यसमाज का मुख्य प्रयोजन है।** आर्यसमाज सत्य का पोशक व प्रचारक है और विश्व के सभी मनुष्यों में वेदों के सत्य ज्ञान का प्रचार कर उनका कल्याण करना चाहता है। वैदिक ज्ञान ही एकमात्र मनुष्य के अभ्युदय व निःश्रेयस का कारण है, यह निर्विवाद सत्य है। आर्यसमाज के संगठन में कुछ दुर्बलतायें हो सकती हैं परन्तु विश्व के कल्याण की दृष्टि से आर्यसमाज की अवधारणा व उसका प्रभावशाली सशक्त रूप ही मानवता के हित में है। वेद और आर्यसमाज विश्व में मानवता को विद्यमान रखने की गारण्टी है। इसके साथ विश्व के सभी मनुष्यों को अभ्युदय व निःश्रेयस के मार्ग पर अग्रसर करने का एकमात्र संगठन हैं। इसके महत्व को जानकर सभी मनुष्यों को इसे सहयोग देना चाहिये और अपनी सर्वांगीण उन्नति करनी चाहिये।

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121

सरस्वती पूजा – वसन्त पञ्चमी का वैज्ञानिक स्वरूप

–डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

सरस्वती पूजा :–

वसन्त पञ्चमी के दिन महाशक्ति सरस्वती की पूजा की जाती है। प्राचीन समय में वैदिक अध्ययन का सत्र श्रावण पूर्णिमा (उपाकर्म) से प्रारम्भ होकर इसी तिथि को समाप्त (उत्सर्जन) होता था। इसी दिन सरस्वती पूजन करना इसी स्मारक का अवशेष है।

सरस्वती वाणी और विद्या की अधिष्ठात्री देवी है वस्तुतः सरस्वती भी परमात्मा की अनन्त शक्तियों में से एक शक्ति है। वेदों में सरस्वती (वाणी) के 57 नाम हैं श्लोकः, धारा, इडा, गौः, गौरी, गान्धर्वी, गभीरा, गम्भीरा, मन्द्रा, मन्द्राजनी, वाशी, वाणी, वाणीची, वाणः, पविः, भारती, धमनिः, नाड़ी, मेना, सूर्या, सरस्वती, निवित्, स्वाहा, वग्नुः, उपब्दिः, मायुः, काकुत्, जिह्वा, घोषः, स्वरः, शब्दः, स्वनः, ऋक्, होत्रा, गीः, गाथा, गणः, धेना, ग्नाः, विपा, नना, कशा, धिषणा, नौः, अक्षरम्, मही, अदितिः, शची, वाक्, अनुष्टुप्, धेनुः, वल्गुः, गल्दा, सरः, सुपर्णी और बेकुरा। ये नाम सरस्वती के अनन्त गुण, कर्म आदि विशेषता को दर्शाते हैं। सरस्वती हम सबकी माता है और "न मातु परं दैवतम्" अर्थात् माता से बढ़कर दुनियाँ में और कोई बड़ा देवता नहीं होता। सरस्वती के प्रत्येक तत्त्व का वैज्ञानिक महत्त्व है। मनुष्यों के जीवन के लिए वे सभी तत्त्व अत्यन्त उपादेय हैं।

चार हाथ – वे चारों दिशाओं के प्रतीक हैं।

सफेद वस्त्र – जो कि सात्विकता का प्रतीक हैं।

पीला रंग – यह जिज्ञासा का प्रतीक है। जिज्ञासा उन्नति की पहली सीढी है।

हंसवाहिनी – हंस नीर–क्षीर विवेक का प्रतीक है। विवेक से सद्ज्ञान होता है।

पुस्तक – (चारों वेद) ज्ञान के प्रतीक हैं। ज्ञान से ही मुक्ति मिलती है

स्फटिकमाला – स्पष्टता का प्रतीक है। जीवन में स्पष्टता होनी चाहिए। जीवन को उलझनों में नहीं रखना चाहिए।

कमण्डलु – यह संग्रह का प्रतीक है। निरन्तर अच्छाई का, धर्म का एवं तप का संग्रह करते रहना चाहिए।

कमलपुष्प – निर्लिप्तता एवं निर्मलता का प्रतीक है। पंक में रहते हुए भी पंकज (कमल) कीचड़ से अलग रहता है। इसी प्रकार काम, क्रोध आदि विषय–विकारों से दूर होकर दुनियाँ में कमल पुष्प के समान रहना चाहिए।

वीणा – यह जीवन का प्रतीक है। जैसे वीणा के तारों को ज्यादा ढीला छोड़ दिया जाये तो संगीत सुनाई नहीं देता एवं तारों को ज्यादा कस देने पर भी आवाज नहीं आती। ऐसे ही जीवन रूपी वीणा में भी सदैव सन्तुलन रहना चाहिए। यह वीणा हमारे जीवन को प्रायोगिक (व्यावहारिक) ज्ञान का भी प्रतीक है अर्थात् हम मन, वचन एवं कर्म से सदैव एक रहें।

इसी प्रकार सरस्वती में ज्ञान+कर्म एवं भक्ति तीनों का समन्वय है। जैसे प्रयाग में सरस्वती नदी को लुप्त मानते हैं ऐसे ही हमारे शरीर में सुषुम्ना नाड़ी सरस्वती है। तीन विशेष नाड़ियाँ इडा, पिंगला एवं सुषुम्ना हैं। सुषुम्ना को योगीजन ही जान पाते हैं क्योंकि वे गहराई में उतरकर परमात्मा का साक्षात्कार करते हैं। वैसे ही जो भी व्यक्ति ज्ञान की गहराई में उतरेगा उसे सरस्वती का प्रसाद मिलेगा। जैसे आदि कवि वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, सन्तकवि तुलसीदास जैसे कवियों को सरस्वती की कृपा प्राप्त हुई थी। जीवन में ज्ञान–कर्म एवं भक्ति का समन्वय होने से चरित्र उत्तम बनता है। सात्विकता, सौम्यता एवं सरलता की स्थिति जीवन में आती है। मनुष्य नर से नारायण बनता है। देवत्व की ओर अग्रसर होता है। संसार में जितने भी व्यक्ति महान बने हैं उन सब पर सरस्वती की कृपा रही है।

ओ३म् पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसु।

माघ शुक्ल पञ्चमी को वसन्त पञ्चमी का महोत्सव मनाया जाता है। वसन्त पञ्चमी व सन्त आगमन की अभिनन्दन तिथि है। प्राचीन काल से इस महोत्सव को धूमधाम के साथ मनाया जाता है। शिशिर ऋतु परम कष्टदायिनी ऋतु है। इस ऋतु में मनुष्य और पशु–पक्षी तो दूर वृक्ष, लता सरोवर आदि की प्राकृतिक शोभा भी क्षीण हो जाती है सभी कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं, परन्तु वसन्त आगमन के साथ सभी प्रसन्नता अनुभव करते हैं। इसे श्री पञ्चमी भी कहते हैं। वसन्त पञ्चमी वसन्त ऋतु से 40 दिन पहले आता है।

वसन्त का वर्णन भी कवि शब्दों में –

नभः प्रसन्नं सलिलं प्रसन्नं, निशा प्रसन्ना बिभलेन्दुरम्या।
अहो वसन्ते वितता वसन्ति, प्रसादलक्ष्मी प्रतिवस्तुभाति।

भारत कृषि प्रधान देश है। भारत के अन्नदाता किसान अपने अहर्निश के परिश्रम को आसन्न आषाढ़ी उपज शस्य के रूप में सफल देखकर फूले अंग नहीं समाते। उनके गेहूँ, जौ, सरसों आदि के खेतों की नवाविर्भूत बालों से युक्त लहलहाती हरियाली उनकी आँखों को तरावट और चित्त को अपूर्व आनन्द देती है। कृषि के सब कार्य इस समय समाप्त हो जाते हैं। अतः कृषि प्रधान भारतीयों को इस समय आमोद–प्रमोद और राग–रंग की सूझती है। अतः कई प्रदेशों में आज के दिन नवान्न, नवशस्येष्टि, नवान्नप्राशन्न उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। वसन्त पञ्चमी के दिन से होली की तैयारी शुरू कर देते हैं। होली एकत्र करते हैं। वसन्त के स्वागत के लिए प्रकृति भी अपना समारोह आरम्भ कर देती है। भारतीय प्रकृति प्रेमी हैं। जब प्रकृति देवी ही सर्वतोभावेन ऋतुनायक के स्वागत में तन्मय है, तो उसी के पंचभूतों से बना हुआ रसिक शिरोमणि मनुष्य रसवन्त के शुभागमन से किस प्रकार बहिर्मुख रह सकता है। इसे मदनोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। संस्कृत साहित्य के दो प्रमुख नाटक मालविकाग्निमित्रम् एवं रत्नावली इस वसन्तोत्सव के उपलक्ष्य में अभिनीत हुए थे। ऐतिहासिक दृष्टि से आज के दिन वीर बालक हकीकतराय का बलिदान हुआ था। वस्तुतः वसन्त जीवन के आनन्द का उत्सव है–

दुःखद दूर हुआ हिम त्रास है, सुखद आगत श्री मधुमास है।
अब कहीं दुःख का न निवास है, सब कहीं बस हास विलास है।

आतंकवादी.........

धूर्त पाखण्ड आतंवादियों ने गलत रास्ता हिंसा का दिखाया था।
युवाओं को मानव बम धमाका करना सिखाकर दहशत को फैलाया था ।।
हमारे घर में ही आकर आंतकवाद फैलाने का अड्डा जमा लिया।
मौका पाकर विस्फोट करके निर्दोषों को मार दिया।
इन आतंकवादियों ने झूठा धार्मिक उन्माद जिहाद दे दिया।
निर्दोषों को मारकर ऐसी हिंसा से जन्नत कैसे पा लिया।।
इन गुमराह युवाओं को सही समझ देकर उचित मार्ग दिखाओ।
हिंसा छोड़कर सही मार्ग पर उचित दिशा पा जाओ ।।
इस प्रकार की जिहाद को धर्म बताकर जन्नत दिखाकर हिंसक हैं।
जघन्य पापों से निर्दोषों को मारकर अपना भविष्य को बिगाड़ा है।।
पाप का घड़ा भरने फिर फूटकर उसका बुरा फल भोगना है।
अपने गुनाहों के फल को अपार दुखदायी-कष्टों से पाना है।।
परमात्मा की न्यायव्यस्था में सभी असहाय और विवश हैं।
अपने किये कुकृत्यों को एक बार स्वयं निरीक्षण करना है।।
गन्दी नाली का कीड़ा बनकर जीवन भर गन्दगी खाना है।
जैसी करनी वैसा भरो को संतो-फकीरों की वाणी को पूरा करना है।।
धोखा देकर स्वार्थ में अन्धे तुझे 'रमदा' बहका रहे हैं।
इनकी बातों में न आकर सच्चाई के मार्ग से तर जाना है।।
आतंक की तबाही से घर-परिवार को बरबाद करना है
आस्तीन के साँप बनकर अपनों को ही डसना है।।
अंग-भंग कर अथवा मारकर युवा-बच्चों, बूढ़ों से कुछ न मिलना है।
सच कहना ही यहाँ पर हमारा गुनाह बनकर दुखी कर रहा है।।
कुदरत का खेल यह अजीब है 'रमदा' को मुक्त कर दो।
'सत्यमेव जयते' 'अहिंसा परमोधर्मः' का जयघोष कर दो।।
आने वाली पीढ़ी को सही मार्ग पर चलने को 'रमदा' कह रहा है।
गलत रास्ते पर जो भटक गये उन्हें सन्मार्ग दिखा रहा है।।

–प्रोफेसर रामसिंह रमदा चलभाष – 9997337931

वेद मूर्ति श्री पादराव दामोदर सातवलेकर

पण्डित सातवलेकर ने हैदराबाद में एक विद्वान् देश भक्त, कर्मयोगी का जीवन व्यतीत किया। चित्रकला की व्याव सायिक व्यस्ततर, संस्कृत ग्रन्थों का स्वाध्याय "विवेक वर्धिनी" संस्था के कार्यकलापों का सुचारु रूप से संचालन, आर्य समाज के कार्यो में योगदान ने पण्डित जी को पूर्णतः व्यस्त कर दिया था। श्री केशव राव कोरटकर उनकी व्यस्तता के सहयोगी थे। पण्डित जी अपनी विद्वता के कारण आर्य समाज की गतिविधियों का अन्तरंग भाग बन गए थे। पं. सातवलेकर का आर्य समाज के विद्वानों से वैचारिक स्तर पर कुछ मतभिन्नता तो हुई परन्तु आर्य समाज के प्रति उनकी यह अटूट धारणा बनी रही कि आर्य समाज का प्रचार यदि सम्पूर्ण भारत में हो जाए तो भारत का समाज अनेक कुरीतियों तथा अवांछित विदेशी प्रभावों से मुक्त हो जाए। वह ऋषि दयानन्द को उन महापुरुषों की अग्रिम पंक्ति में रखते थे जिन्होंने भारत वर्ष को नवजागरण का मन्त्र दिया था। पं. सातवलेकर की दृष्टि में, वेदों के प्रति जनमानस का ध्यान आकृष्ट करने में ऋषि दयानन्द का योग दान अतुलनीय था।

बम्बई से हैदराबाद आने पर पं. सातवलेकर को अपने निवास के लिए एक मकान की आवश्यकता थी। सौभाग्य से एक नवाब का मकान गत 19 वर्ष से खाली पड़ा था। मकान के विषय में कहा जाता था कि रात के धुंधलके में भूत आ कर मकान में नाचते, उधम मचाते तथा सभी वस्तुओं को उलट पुलट कर जाते हैं। यह बात सुनते ही पण्डित जी ने नवाब के पास जाकर मकान किराए पर मांगा नवाब सुनकर चकित हुआ तथा उसने पण्डित जी को मकान का सच बताया। पण्डित जी को वह 30 कमरों वाला, नवाब का महल जैसा मकान, 20 रु. मासिक में मिल गया। मकान की सफाई पुताई के पश्चात् पण्डित जी सपरिवार उस मकान में रहने लगे पण्डित जी ने गायत्री मन्त्र पढ़ा या नहीं, यह तो वही जाने परन्तु मकान में भूत प्रेत तो नहीं आए परन्तु उस में दो अन्य परिवार भी आ कर रहने लग गए। व्यायामशाला के कुछ युवक भी यदा कदा वहां ठहर जाते थे। पण्डित जी की अन्य सामाजिक गतिविधियों में भी यह मकान बहुत

उपयोगी रहा।

हैदराबाद में पं. सातवलेकर का परिचय "दत्तो अपाजी तुलना पुरकर" से हुआ। तुलजापुरकर थियोसौफिकल सोसाइटी के सदस्य तथा लोक मान्य बाल गंगा धर तिलक के परम अनुयायी थे। पं. सातवलेकर कुछ समय तक तुलजापुरकर के संग थियोसौफिकल सोसाइटी की मीटिंगों में जाते रहे। सोसाइटी के चिन्तन के प्रति पण्डित जी के मन में आदर का भाव था। पण्डित जी की भेंट सोसाइटी की अन्यतम नेता डा. ऐनी बीसेन्ट से भी हुई। डा. ऐनीबीसेन्ट ने भारत के स्वन्त्रता संग्राम में भाग लेते हुए कांग्रेस की प्रैजीडेन्ट भी रहे। वह बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापकों में भी रहे। थियोसौफिकल सोसाइटी में अंग्रेजी के प्रभुत्व के कारण पण्डित जी सोसाइटी से दूर हो गए। हैदराबाद एक बड़ी रियासत थी परन्तु उस में आवागमन के साधनों का अभाव था। यहां के वनों तथा पर्वतीय क्षेत्रों में छोटे-छोटे गांव थे। रियासत का यह भौगोलिक स्वरूप क्रान्तिकारियों को अपनी गतिविधियां चलाए रखने के लिए एक उपयुक्त सुरक्षित स्थान प्रदान करता था। रियासत की जनता भी क्रान्तिकारियों के प्रति सहयोग की भावना रखती थी तथा उन्हें हर प्रकार के साधन तथा धन प्रदान करती थी। यहां युवक मिलकर योजना बनाते साधन जुटाते तथा ब्रिटिश भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी कार्यवाही को सम्पन्न करने के पश्चात रियासत में आकर छिप जाते थे। एक समय रियासत में, देश के विभिनन भागों से आए क्रान्तिकारियों की संख्या 1200 तक पहुंच गई थी। विवेक वर्धिनी संस्था की व्यायामशाला सभी नवयुवक क्रान्तिकारियों का मिलन स्थल बन गई थी। यहां योग, व्यायाम के साथ उन्हें देश प्रेम तथा क्रान्तिकारी विचारों की दीक्षा भी मिलती थी। 1909 के जैक्सन हत्याकाण्ड के नायक अनन्त कान्हेरे तथा स्वामी शिवानन्द इसी व्यायाम शाला की ही उपज थे। भारत वर्ष में 1897 में प्लेग तथा अकाल ने अपना एक भयंकर रूप दिखा था। इसी समय में महारानी विक्टोरिया का राज्यारोहण हुआ था जिसके लिए भारत की जनता पर नए कर लाद दिए गए थे। पूना के कलैक्टर रैण्ड साहब ने अत्यन्त निर्दयता से इन करों की वसूली शुरु की थी। रैन्ड साहेब के इस निर्मम व्यवहार के कुपित होकर चापेकर बन्धुओं ने रैन्ड साहेब की जीवन लीला का ही अन्त कर दिया था। चापेकर बन्धुओं में से एक भाई बाल कृष्ण चापेकर हैदराबाद में आ कर छुपे थे। लोक मान्य तिलक के संकेत पर केशवराव कोरटकर ने बाल कृष्ण की सुरक्षा की व्यवस्था की थी।

पं. सातवलेकर ने इन दिनों रियासत के बड़े गांवों में देश भक्ति के व्याख्यानों की झड़ी लगा दी थी। पण्डित जी के व्याख्यानों की सभाओं की अध्यक्षता सरोजनी नायडू के पिता श्री अघोरनाथ चट्टोपाध्याय करते थे। इन सभाओं का आयोजन तथा व्यवस्था श्री केशवराव कोरटकर तथा दत्रोअपा जी तुलजापुरकर करते थे। इस प्रकार अपने व्याख्यान मण्डल को पण्डित सातवलेकर ने अपनी सक्रियता से जीवन्त बना रखा था। बालक बालिकाओं का स्कूल विकास करते हुए एक कॉलेज का रूप ले गया। कालान्तर में पण्डित जी के तीसरे भाई डा. सीता राम पन्त कॉलेज के प्रिसिंपल तथा संचालक बने। इस प्रकार "विवेक वर्धिनी" नाम से पं. सातवलेकर द्वारा रोपे गए पौधे की तीनों शाखए अपने राष्ट्रीय उद्देश्य को पूरा करने में विकास पथ पर चलती रही। 1906 के निकट की बात है, रायपुर के कुछ पौराणिक पण्डित एक वृहद यज्ञ का आयोजन करने जा रहे थे जिस में पशुबलि का भी आयोजन था। पं. सातवलेकर के मतानुसार पशुबलि वेद विरुद्ध कृत्य था। पण्डित जी ने बैठ कर परस्पर मन्त्रणा करने का प्रयास किया। आर्य समाज के कुछ नवयुवकों को संग लेकर हवन में इस कृत्य को रुकवाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु सफल न हो सके। इसके पश्चात् पण्डित जी ने "वैदिक यज्ञ संध्या" नाम की पुस्तक हिन्दी में तीन भागों में लिखी। तब "ज्ञान प्रकाश" नाम का एक पत्र प्रकाशित होता था। पं. सातवलेकर ने "जाति व्यवस्था" "वर्ण व्यवस्था" "अस्पृश्यता निवारण" पर "ज्ञान प्रकाश" पत्रिका में लेख लिखे जिनमें धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर उचित अनुचित का विवेचन किया गया था। बड़ौदा नरेश सियाजी राव गायकवाड़ की नज़रों से यह लेख गुज़रे तो उन्होंने पं. सातवलेकर को इन विषयों पर एक विस्तृत ग्रन्थ लिखने का आग्रह किया। पण्डित जी ने "स्पशी स्पर्श" नाम का एक ग्रन्थ लिखा जिस पर बड़ौदा सरकार ने पण्डित जी को 500 रु. का परितोषिक प्रदान किया।

इन्हीं दिनों पं. सातवलेकर ने वेदों की ऋचाओं के आधार पर एक लेख लिख कर लोक मान्य तिलक को भेजा। तिलक ने इस लेख को अपनी पत्रिका "केसरी" में सम्पादकीय लेख के रूप में प्रकाशित किया। इस लेख के प्रकाशन से पण्डित जी का मान और भी बढ़ गया। इन्हीं दिनों लोक मान्य तिलक ने अपना चतुःसूत्री कार्यक्रम देश के समक्ष रखा जो इस प्रकार था। (1) स्वराज्य (2) स्वदेशी (3) बहिष्कार तथा राष्ट्रीय शिक्षा। उस समय सम्पूर्ण भारत के मानस पटल पर लोक मान्य तिलक छाए हुए थे। तिलक ने "स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और इसे मैं लेकर रहूंगा" का मन्त्र जनमानस को दिया था। इस मन्त्र ने देश के युवाओं में संघर्ष की नई ऊर्जा का संचार किया था। तिलक की विचारधारा के पंजाब में लाला लाजपतराय तथा बंगाल में विपिन चन्द पाल थे। यह त्रिमूर्ति 'लाल, बाल, पाल' की 'गरम दल' की कही जाती थी। दूसरा दल दादा भाई नौरोजी तथा गोपाल कृष्णा गोखले का था जो शासकों से वार्तालाप द्वारा भारतवासियों के लिए कुछ अधिकारों तथा सुविधाओं की मांग करने तक सन्तुष्ट था तथा 'नरम दल' कहा जाता था।

पं. सातवलेकर लोकमान्य तिलक की चतुःयोजना के पक्षपाती

थे। पण्डित जी ने अपने व्याख्यानों में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी को अपनाने का अपनी तेजस्वी वाणी से भरपूर प्रचार करना शुरु किया। इस प्रचार के फल स्वरूप समाज के प्रभावी व्यक्तियों तक ने विदेशी वस्त्रों को त्याग स्वदेशी को अपनाना शुरु कर दिया। इस स्थिति ने दरबार के अग्रेंज रैज़िडैन्ट के कान खड़े कर दिए। उसने निज़ाम से डा. अघोर नाथ चट्टोपाध्याय, पं. सातवलेकर, कोरटकर तथा तुलजापुरकर को रियासत से निकाल देने को कहा निज़ाम ने पं. सातवलेकर को कहला भेजा कि आपके भाषणों से अंग्रेज रैज़िडैन्ट बहुत नाराज़ है आप अपने भाषण बन्द कर दें वरना आपको विवश होकर रियासत से निकालना पड़ेगा। पं. सातवलेकर ने निज़ाम को उत्तर इस प्रकार दिया। " हम स्वदेश प्रेम तथा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर व्याख्यान देते हैं। इस से रियासत में व्यापार वृद्धि होती है, जनता समृद्ध होती है, देश का धन देश में ही रहता है। इतने जन हित का काम हम कैसे छोड़ सकते हैं। सरकार की जो भी इच्छा हो करने को स्वतन्त्र है। पण्डित जी का अधिकांश समय स्वाध्याय, आर्य समाज तथा कांग्रेस के ही प्रचार में व्यतीत होता था। इन्हीं दिनों कोल्हापुर के एक मराठी मासिक पत्र "विश्व वृत" में पण्डित जी का एक लेख "वैदिक राष्ट्र गीत" प्रकाशित हुआ। यह लेख हिन्दी में पुस्तकाकार रूप में प्रयाग से छपा तथा मराठी में पुस्तकाकार रूप में बम्बई से प्रकाशित हुआ। सरकार ने हिन्दी तथा मराठी के दोनों प्रकाशनों को ज़बत कर लिया। पण्डित जी को निज़ाम की चेतावनी तो पहले से ही मिल चुकी थी। व्याख्यानों तथा लेखों से धूम तो पं. सातवलेकर ने मचा रखी थी। उनके कारण शेष तीन पर संकट आए यह पण्डित जी को स्वीकार नहीं था। अतः 1907 में पं. सातवलेकर ने बम्बई छोड़ दिया। सातवलेकर के चले जाने के पश्चात सारा मामला शान्त हो गया।

हैदराबाद छोड़ने के पश्चात पं. सतवलेकर का ध्यान महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) की ओर गया। महात्मा मुन्शी राम तब तक संन्यासी नहीं बने थे। महात्मा मुंशी राम के रूप में उन्हें सन 1900 में गंगा के पार गुरुकुल की स्थापना कर राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का अभूतपूर्व परीक्षण प्रारम्भ किया था।

जालन्धर के वकील मुंशी राम पूरे रईसी ठाठ बाठ का जीवन व्यतीत कर रह थे बिगड़े रईसों के सारे लक्षण उन में थे। ऋषि दयानन्द के सम्पर्क तथा उपदेश ने उनके जीवन में अदभुत परिवर्तन ला दिया। इस परिवर्तन की रोचक कहानी उन्होंने "कल्याण मार्ग का पथिक" नाम से अपनी जीवनी के रूप में लिखी है।

हैदराबाद छोड़ने के पश्चात पं. सातवलेकर गुरुकुल कागड़ी हरिद्वार पहुचें। गुरुकुल पहुंच कर पं. सातवलेकर को अपने सपनों का संसार मिल गया था। गुरुकुल में पण्डित जी ने ऋषियों का संसार पाया। ब्रह्मचारियों का प्रातः चार बजे उठ कर नित्य कर्म से निवृत हो गंगा के हिमशीतल जल में स्नान करते हुए वेद मन्त्रों का उच्चारण करना, वन्य प्रकृति का मोहक वातावरण पण्डित जी की आत्मा को स्पर्श कर गया। यहां ब्रह्मचारियों तथा अध्यापकों के कुटियानुमा सादे मकान थे। पण्डित जी यहां ब्रह्मचारियों को चित्र कला सिखाते स्वयं वैदिक वाड्मय का स्वाध्याय करते तथा योगाभ्यास में समय व्यतीत करते बड़े नगरों के छल कपट से दूर आश्रम का सरल सुसंस्कृत जीवन उनके मन को बहुत लुभा गया। वैदिक धर्म, राष्ट्रीय शिक्षा, स्वराज्य प्रेम तथा सदाचार से ओत प्रोत स्वप्न को उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी के रूप में धरती पर उतरते देखा। पं. सातवलेकर तथा उनकी पत्नी को यह अखरा कि वह हैदराबाद का स्वतन्त्र धनपति का जीवन छोड़ कर वेतन भोगी बन गए। परन्तु गुरुकुल तो एक परिवार समान था। यहां स्वामी सेवक का भाव नहीं था।

महात्मा मुंशी राम (स्वामी श्रद्धानन्द) का उत्तर भारत में विशेषतः पंजाब पर अनोखा प्रभाव था। गुरुकुल के वार्षिक उत्सव में एक से दो लाख की भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। बड़े बड़े धनपति भी आ कर फूस की झोंपड़ियों में निवास करते थे। बड़े अधिकारी भी दर्शनार्थी के रूप में आते थे। सारी व्यवस्था बिना किसी सरकारी सहयोग के चाक चौबन रहती थी। सरकार की ओर से सहायता करने के अनेक प्रयास हुए परन्तु विदेशी सरकार के सर्वथा बहिष्कार की भावना व्याप्त थी ।

संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) के गवर्नर तथा भारत के वायसराय विभिन्न अवसरों पर गुरुकुल आए। उनकी प्रार्थना पर ही महात्मा जी ने उन्हें आमन्त्रित किया था। उनका सत्कार गुरुकुल की प्रथानुसार ही हुआ। उन्हें आश्रम का ही भोजन खिलाया गया तथा तुलसी की चाय पिलाई गई। केले के पत्तों में लपेट कर संस्कृत में लिखा मान पत्र भेंट किया गया। जाते समय वायसराय ने गुरुकुल में टांगने के लिए ब्रिटिश सम्राट तथा साम्राज्ञी का चित्र भेंट किया। कुछ दिन तक वह चित्र पुस्तकालय में टंगे रहे। कुछ दिन पश्चात उन चित्रों से मुक्ति पाने की भावना ने जोर पकड़ा। उन्हें उतारना उचित नहीं समझा गया धार्मिक नेताओं के बड़े बड़े चित्र बनाकर पुस्तकालय में टांग देने के विचार पर सहमति बनी जिस से वायसराए द्वारा दिए चित्र महत्व हीन हो जाए।

बड़े बड़े पोटरेट बनाने का काम पं. सातवलेकर ने बड़े उत्साह तथा लगन से किया। ऋषि दयानन्द, स्वामी बिरजानन्द, महात्मा मुंशी राम, लोक मान्य बाल गंगा धर तिलक के पाटरेट पं. सातवलेकर ने बना कर पुस्तकालय में लगाए जो आज तक गुरुकुल कांगड़ी के पुस्तकालय की शोभा बने हुए हैं।

–बहादेव भाटिया
पश्चिम विहार, नई दिल्ली

महर्षि जी आधुनिक भारत के निर्माता

ऋषि दयानन्द जाज्वल्यमान नक्षत्र थे जो भारतीय आकाश पर अपनी अलौकिक आभा से चमके और गहरी निद्रा में सोए हुए भारत को जागृत किया। 'स्वराज्य' के वे सर्व–प्रथम सन्देश वाहक थे। **–लोकमान्य तिलक**

मेरी दृष्टि में वे सच्चे राजनीतिज्ञ थे। चालीस वर्षों से कांग्रेस का जो कार्यक्रम रहा है वे सब कार्य साठ वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द ने देश के लिए रखा था। सारे देश में एक भाषा, खादी, दलितोद्धार, स्वराज्य की घोषणा आदि सब दयानन्द ने देश को दिया। **–सरदार पटेल**

जो कार्य बाद में कांग्रेस और गान्धी जी ने शुरू किए, उन्हें ऋषि दयानन्द 50 वर्ष पूर्व आरम्भ कर चुके थे।

–डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद

मुझे स्वामी दयानन्द जी के ग्रन्थों से स्वराज्य की लड़ाई में बड़ी प्रेरणा मिलती है। **–दादाभाई नौराजी**

स्वामी दयानन्द जी के ग्रन्थों से स्वराज्य के मंदिर का निर्माण होगा तो उसमें सर्वोच्च स्थान नंगे फकीर महर्षि दयानन्द को दिया जाएगा।

–श्रीमती नौरोजी

गांधी जी राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह थे। वे हमारी राष्ट्रीय प्रवृत्तियों और स्वतन्त्रता आन्दोलन के आद्य प्रवर्तक थे।

–आयंगर जी

स्वामी दयानन्द भारतीय सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक थे, उन्होंने सुप्त राष्ट्र में नवचेतना और नव–जागरण का संचार किया। ऐसे महापुरुष का राष्ट्र चिर ऋणी है....।

–सेठ गोबिन्ददास

उन्होंने समाज में राष्ट्रीय भावना जागृत की। धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

–मोरारजी देसाई

क्रियात्मक आदर्शवादी व अजेय राष्ट्र निर्माता। **–प्रो. एन.जी.रंगा**

वे मेरे राजनैतिक गुरु हैं।

–विट्ठल भाई पटेल

वे महान राष्ट्रनायक नेता और क्रान्तिकारी महापुरुष थे।

–लाल बहादुर शास्त्री

स्वामी दयानन्द जी ने सर्वप्रथम भारत की स्वतन्त्रता का बीज बोया था। भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में सर्वप्रथम उनका नाम लिया जाएगा।

–श्री काटजू

दयानन्द जी राष्ट्र निर्माण के लिए स्फूर्तिदायक, बलदायक व उत्कट देशभक्त थे, अतः वे राष्ट्रभक्त समझकर उनकी वन्दना करते हैं।

–टी.एल.वासवानी

गांधी जी से पूर्व महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र के लिए महान कार्य किया। उन्होंने भारतीयों को 'स्वराज्य' का मार्ग बताया। ऋषि एक पूर्ण पुरुष थे...भारत के युग निर्माता थे।

–डा. पट्टाभि सीतारमैया
(कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष)

महर्षि दयानन्द उन महापुरुषों में से थे जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया। उनके आचार सम्बन्धी पुनरूत्थान के कारण ही यह संभव हुआ।

–नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

"वीर हकीकत का बलिदान"

काल लौटकर फिर नहीं आता– इसलिए चिरनिद्रा में मत सोओ। अपनी वीरता के गत इतिहास को दोहराओ। हमारे पूर्वज, हमारे इतिहास पुरूष, हमारे रण बांकुरे, हमारे वीर हकीकत जैसे धर्मध्वजी बालक, प्रताप जैसे प्रणवीर, शिवा जैसे शौर्यशाली, छत्रपाल से क्षत्रिय, गुरु गोबिन्द जैसे गुरु, बन्दा बैरागी जैसे वीरों की गाथाएं, नलवा की सी बहादुरी आपके कानों में बराबर डाली जाती रही हैं। फिर भी आप गुलामी की सी मांद में दुःखी से बैठे हैं। आपका तो मुलायम ही आपको मुस्लिम धुन में धुन रहा है, जौहर विश्वविद्यालय का निर्माण कर दूसरे पाकिस्तान की नींव रख रहा है।

यह मेरठ जनपद स्वतंत्रता संग्राम की वीर सैनिक भूमि है, जहां से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आजादी दिलाने वाले 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का नारा दिया था। घर–घर, नगर–नगर, गांव–गांव, डगर–डगर स्वतंत्रता के बीज का आरोपण कर, इसी क्रांतिकारी नगर के बुढाना गेट की पावमानी ज़मी को वेदमंत्रों से पुष्पित कर आर्य समाज की स्थापना से अंग्रेजों को ललकारा था। जाओ विदेशी जाओ, यह वीरभूमि मेरठ है, जहां के आश्रमों में भरत का जन्म हुआ था। यही वह गंगा यमुना का दोआबा मय राष्ट्र है। जिसके गर्भ से उत्पन्न वीर, वनराज सिंहों से खेलते थे। यहां के आर्यों में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा का स्थान नहीं है। परीक्षित का किला, कुरूवंश की महानगरी हस्तिनापुर, महारानी शकुन्तला का पालक महर्षि कण्वाश्रम, शिल्प नगरी बरनाबा का लाक्षागृह, युधिष्ठिर का महाभिषेक इन्द्रप्रस्थ, इसी मेरठ नगरी की चारों दिशाओं को प्रकाशित कर रहे हैं। महात्मा देवतास्वरूप विदुर सदा इसकी रक्षा करता रहा है।

परन्तु आज के आधुनिक युग में ईरान–इराक फिलिस्तीन–मिश्र और अरब आदि देशों में गैर मुस्लिम को मुसलमान की भांति समान नागरिक नहीं माना जाता है, और न उसे मुसलमान की भांति अधिकार प्राप्त हैं। भारत से विभाजित पाकिस्तान में भी मुसलमानों के अतिरिक्त दूसरे धर्म के नागरिकों को दूसरी श्रेणी का नागरिक माना जाता है और उन्हें तंग किया जाता है।

हकीकत राय के साथ जो दुर्घटना हुई है उसका सम्बन्ध इस्लामी राज्य की इसी वस्तुस्थिति से है। हकीकत राय की हत्या का सारा दोष हम उस समय भारत में रहने वाले उन करोड़ों हिन्दुओं को देते हैं जो अपने धर्म पर अटूट आस्था रखने वाले एक हिन्दू बालक की रक्षा करने के लिये आगे नहीं आये बल्कि रक्षा करने में सर्वथा असमर्थ रहें । कितना भारी आश्चर्य का विषय है कि कोटि–कोटि हिन्दुओं पर कुछ सहस्त्र क्रूर मुस्लिम राज्य करते रहे।

हकीकत राय के जिस बलिदान की चर्चा हम कर रहे हैं उसका सारा दोष और पूर्ण उत्तरदायित्व केवल उन क्रूर स्वभावी मुसलमानों पर ही नहीं डाला जा सकता। इतिहासकारों की दृष्टि में मुस्लिमों से अधिक दोषी और उत्तरदायी भारत की वीर हिन्दू जनता दोषी है।

वीर हकीकत राय के बलिदान की यह घटना उस समय के पश्चिमी पंजाब के सियालकोट नगर की है– उस समय वहां के हिन्दू नागरिकों की संख्या वहां पर विद्यमान मुसलमानों से कहीं अधिक थी। वे सब रोते रहे, शोक मनाते रहे, पर उनकी आंखों के सामने जो अत्याचार और अन्याय हुआ, उसके प्रतिकार में वहां की हिन्दू जनता तैयार नहीं हो सकी–जैसे मो. बिन कासिम के सिंध पर आक्रमण के समय अहिंसा के उपासक बौद्ध और जैनी आततायी सैनिकों को अहिंसा और शान्ति का पाठ पढ़ाने में सर्वथा असफल सिद्ध हुए और इस्लाम के दास बन गये।

समय के प्रभाव से भागमल व्यापारी के बुद्धिमान हकीकत को मुल्ला के मकतब में प्रवेश पाने हेतु मजबूर होना पड़ा। इसके अलावा उस समय तक हिंदू समाज में बौद्ध और जैनियों द्वारा प्रचारित अहिंसा की समाविष्ट भ्रान्त कल्पना भी वीर बालक हकीकत की हत्या का बचाव नहीं कर सकी।

इस समय हिन्दू समाज की आस्था वेदादि धर्मशास्त्रों से हटकर कपोल कल्पित पुराणों पर टिक गई थी। पुराणों की शिक्षा का सबसे बड़ा दोष यह भी है कि उनसे जनता को अपने अधिकारों की प्रेरणा नहीं मिलती। वहां एक ओर यह गलत धारणा जनता में फैला दी गयी थी कि "आततायी को दण्ड देने के लिए समय–समय पर भगवान अवतार लेता रहा है।" जनता मंदिरों में घंटों घंटों बैठकर घण्टे घड़ियाल बजाकर परमात्मा से सहायता के लिये प्रार्थना करती रहती थी। इससे पुराण पन्थियों की दुर्नीति पर आततायी उनके बच्चों पर, महिलाओं पर अत्याचार करते रहते थे। सियालकोट में वीर हकीकत की हत्याकांड में यह भी प्रमुख कारण रहा।

हिन्दू समाज धर्म के सार को भूल गया था। इस कारण इसके साथ दुर्घटनाएं होती रही हैं। जून 2013 से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आज जनवरी–फरवरी 2014 तक मुलायम ने मुस्लिम वोट के लिए हिन्दू जाति को नष्ट कराने के लिए किन अत्याचारों का इस्तेमाल नहीं किया ?क्योंकि भारत में हिन्दुओं का कोई धर्म नहीं है, सब अपने आपको धर्मनिरपेक्ष के जाल में फंसा पाते हैं। परन्तु धन्यवाद का पात्र है भागमल व्यापारी का पुत्र हकीकत जिसने अस्तित्व की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। सियालकोट के मकतब में पढ़ने वाले सभी बालकों से उसकी बुद्धि प्रखर थी। मकतब का मुल्ला भी उसे पाकर बेहद खुश हुआ था। हकीकत की तीव्र बुद्धि से मुस्लिम सभी बालक उससे ईर्ष्या रखते थे। उससे लड़ते थे। मुल्ला को आये दिन शिकायत लगाकर उसे पिटवाना चाहते थे। मकतब में छुट्टी के समय भी वह अपना कार्य करता रहता था। खेल के समय बालक उसे खींचकर मैदान में ले जाना चाहते थे। उसे दुर्गाभवानी की गाली भी देते थे। उसकी पिटाई भी करते रहते थे। मुल्ला से शिकायत लगाते कि इसने तो मो. पैगम्बर की लड़की को गाली दी है– आप इसे सजा नहीं दोगे तो हम इसकी शिकायत नगर के काजी से करेंगे, यह सुन मुल्ला भी डर गया। नगर काजी ने लड़कों की बात सुनकर निर्णय दिया कि गाली देने के अपराध में किसी को कोई दण्ड का विधान नहीं है। मूर्ख मुस्लिम नगर के काजी से भी संतुष्ट नहीं हुए और इसके विरोध में उलेमाओं ने फतवा दे दिया कि हकीकत को तुरंत कल्त कर दिया जावे। इसके बाद सियालकोट के हाकिम ने कहा–बच्चों के झगड़े को इतना तूल नहीं दिया जाना चाहिए। काजी ने कहा– यदि वीर हकीकत नामक यह बालक मुस्लिम धर्म स्वीकार कर ले तो इसका अपराध क्षमा योग्य माना जा सकता है।

यह केस लाहौर लाया गया, वहां के हाकिम ने कहा "तुम मुसलमान क्यों नहीं हो जाते"?वीर हकीकत बुद्धिमान था – उत्तर दिया– जिस अपराध में मुझे दण्ड दिया जा रहा है, मेरे मकतब में पढ़ने वाले सभी मुस्लिम बच्चों ने मेरी आराध्या देवी दुर्गा भवानी' को पहले गाली देकर भारी अपराध किया था, मुझसे पहले यह दण्ड मुस्लिम बच्चों को भी दिया जाना चाहिए। यह सुनकर लाहौर का हाकिम धर्मवीर वीर हकीकत राय का मुख देखता रह गया, और कहा–लड़का दण्डनीय हो सकता है, किन्तु इसका दण्ड मृत्यु ही है यह तो शरा में नहीं लिखा। अंधे अनाड़ी मुसलमानों ने लाहौर हाकिम के विरोध में नारे लगाना शुरू कर दिया और कहा हम यह मामला दिल्ली दरबार ले जायेंगे।

लाहौर हाकिम ने वीर हकीकत को समझाया–भैया तू मुसलमान ही हो जा, बाद में फिर हिन्दू बन जाना। अभी मृत्यु से बच जा। अनेक लोभ लालच दिये जाने के बावजूद वीर हकीकत राय ने विचारा। सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अन्तर्यामी, भगवान ने जहां भेजा है– वहीं रहूँगा। जगत रचने वाले ईश्वर के विरूद्ध सोचना भी पाप है। "नहीं नहीं नहीं..... .....मैं मण्डी का मोल बिकाऊ धन नहीं हूँ। इसप्रकार सियालकोट के व्यापारी लाला भगमल के आर्य पुत्र ने सर्वशक्तिमान परमात्मा का गहरा स्मरण किया और विचारा कि अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान करना ही श्रेयस्कर है।

इस तरह इस्लाम के क्रूर मज़हबी अत्याचार से निरपराध सप्तवर्षीय अल्पायु धर्मवीर हकीकत राय को लाहौर नगर से 3 किमी. दूर रावी नदी के तट पर तलवार से कत्ल कर दिया गया।.... वहां करोड़ों–करोड़ हिन्दू नपुंसकों ने प्रत्यक्ष रूप से देखा। यह दिन बसन्त पंचमी का था। उसी जगह वीर हकीकत की बलिदान समाधि का निर्माण हुआ था। पाकिस्तान ने उस बलिदानी के स्मृति चिन्ह को मिटा दिया। भारत के धर्मनिरपेक्ष नपुंसक नेता राम मंदिर को बाबरी मस्जिद बनवाने में लगे हुए हैं। डा. गोकुल चन्द्र नारंग के शब्दों में

अगर हिन्दुओं में है कुछ जान बाकी,
शहीदों बुजुर्गो की है पहचान बाकी
शहादत हकीकत की मत भूल जाना, श्रद्धा सुमन उस पर भी चढ़ाना।।

–(साभार आर्य मित्र)

–विद्यावाचस्पति वेदपाल वर्मा शास्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवसर पर श्रद्धांजलियां अर्पित

जयपुर – रविवार 23 दिसम्बर को साप्ताहिक अधिवेशनों में नगर के विभिन्न आर्य समाजों में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धांजलियां अर्पित हूई ।

आर्य समाज मानसरोवर में डॉ. मुरारीलाल पारीक एवं डा. श्रीमती सुमित्रा आर्या ने स्वामी जी के साहस व कृतित्व पर विशुद्ध प्रकाश डाला। उन्हें अदम्य साहस का धनी व सेनानी परिभाषित किया।

आर्य समाज जयपुर, (दक्षिण) के ओमानन्दम परिसर में गुरुकुल पद्धति प्रणेता की स्मृति में संकल्प यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के मुख्य वक्ता सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज.) के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' एवं ब्रह्म डा. कृष्णपाल सिंह रहे। उन्होंने रोष के साथ व्यक्त किया कि यद्यपि स्वामी जी ने पूर्ण समर्पण के साथ अंग्रेज सरकार को ललकारा, खेद है कि अब तक शीर्ष शासकीय नेतृत्व उन्हें भुलाए हुए है।

दिव्य वैदिक सत्संग मंडल के सुनील अरोड़ा एवं मान सरोवर आर्य समाज के उप प्रधान ईश्वर दयाल माथुर का भी इस आयोजन में प्रतिनिधित्व रहा।

नगर के अन्य आर्य समाज, यथा, आदर्श नगर, वैशाली नगर, एवं कृष्णपोल से भी बलिदान दिवस मनाएं जाने के समाचार हैं।

–ईश्वर दयाल माथुर

प्रवेश सूचना–सत्र 2019–2020

महात्मा सत्यानंद मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल शास्त्री नगर लुधियाना पंजाब

दूरभाष : +91–9814629410 (पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

छठी कक्षा में (आयु + 9 से –11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/– रुपए) भरकर 31.03.2019 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

– कन्याओं की लिखित प्रवेश–परीखा 07 अप्रैल 2019 दिन रविवार को प्रातः 8:00 बजे होगी।

– सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

–मोहन लाल कालडा (मैनेजर)

माह जनवरी 2019 के आर्थिक सहयोगी

श्रीमती पूनम कपिला जी, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली		5000/–
ओमवीर सिंह जी, ब्रह्मपुरी, दिल्ली	अपनी पूज्य माता जी की पुण्य स्मृति पर दान	2100/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर–15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री, शुद्धि सभा द्वारा एकत्रित राशि		1100/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री, शुद्धि सभा	मासिक	800/–
श्री शिवकुमार मदान जी, 'ट्रस्टी' जनकपुरी, नई दिल्ली	मासिक	250/–
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	मासिक	100/–

श्री जगदीश मदान जी, जगाधरी हरि. द्वारा चार आजीवन सदस्य बनाये

श्री राजेश बजाज जी, शीदीपुरा, ईस्ट पार्क रोड़, करोल बाग, नई दिल्ली	500/–
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देवघर, जिला यमुनानगर, हरि.	500/–
श्री सोम प्रकाश आर्य जी, गुरुकुल उग्रपुर, मौजा दोलतपुर, सहारनपुर	500/–
वैदिक साधन आश्रम, खजूरी रोड़, शादीपुर, यमुना नगर, हरि.	500/–

श्रीमती संतोष चावला जी द्वारा आर्य महिला आश्रम से एकत्रित दान राशि दिस. जनवरी–19

श्रीमती आशा कक्कड़ जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1200/–
श्रीमती संतोष चावला जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1200/–
श्रीमती वासंती चौधरी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1000/–
श्रीमती कमला डाबर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती सुदेश तलवार जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती संतोष हिंगल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	150/–
श्रीमती संतोष बहल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती कैलाश कपूर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती निर्मल शर्मा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती इन्दु बिज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती भगवती देवी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	50/–
श्रीमती मन्जू सेठी जी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	50/–
श्रीमती कैथरीन जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	50/–

नारियों के अधिकार व कर्त्तव्य

यत् ते नाम सुहवं सुप्रणीतेऽनुमते अनुमतं सुदानु ।
तेना नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्।।

–अथर्व. 7/21/4)

इस मन्त्र में पत्नी को अनुमति शब्द से सम्बोधित किया है। अनुमति से अच्छा नाम शायद सुमति हो सकता है पर नहीं। वेद कहता है तु दुनियाँ के लिये सुमति हो सकती है पर मेरे लिये मुझ पति के लिये तु अनुमति ही है। सुमति का अर्थ होता है। अच्छी मति बुद्धि। सुमति से मनुष्य चाहे तो धन कमा सकता है, विद्या प्राप्त कर सकता है, यश प्राप्त कर सकता है और बहुत कुछ कर सकता है। कहा गया है– बुद्धिर्यस्य बल तस्य जिसके पास बुद्धि है अर्थात् जिसके पास सबकुछ करने का सामर्थ्य है। नैपोलियन बोनापार्ट कहा करते थे मेरे जीवन से असम्भव शब्द निकाल दो। संसार में कुछ भी ऐसा नहीं जो मैं न कर सकूँ। क्यों? क्योंकि मेरे पास मनन करने वाली मति है बुद्धि है। और वह भी सुमति हो तो कहना ही क्या।

पर पति कहता है अपनी पत्नी से – नहीं! तू संसार के लिये सुमति हो सकती है पर मेरे लिये मेरे परिवार के लिये तो तु अनुमति ही है। अनुमति का अर्थ है अनुकूल मति। अनुमति और सुमति दोनों शब्दों में केवल उपसर्ग का भेद है। पर अर्थ की गम्भीरता ध्यान देने योग्य है। पारिवारिक सामंजस्य, पारिवारिक सौहार्द, पारिवारिक संगठन का आज अभाव हो रहा है। संयुक्त परिवार बिखरते जा रहे हैं, नष्ट होते जा रहे हैं इन सबका कारण कौन है? विचार करे तो नारी ही है। क्योंकि पत्नी चाहे तो अपनी अनुमति अर्थात् सबको अनुकूल बना लेनी वाली मति से अथवा स्वयं अनुकूल बन जाने वाली बुद्धि से पूरे परिवार को एकता के सूत्र में आबद्ध कर सकती है।

मन्त्र कहता है– अनुमते! यत् ते नाम - हे अनुमति जो मेरा नाम सुहवं - सुखपूर्वक बुलाने योग्य है अनुमतं - सबके द्वारा अनुमत है स्वीकृत है सुदानु - सुखदायी है इसलिए तेरे नाम के साथ में एक विशेषण और जोड़ता हूँ सुप्रणीते - तु सुन्दर प्रणय करने के योग्य है, प्रेम करने के योग्य है। तु प्रणयपूर्वक लायी गई सुप्रणीता है। प्रणय और परिणय में भी केवल उपसर्ग का ही भेद है। जब कन्या के अन्दर प्रणय जागेगा तभी उसे परिणय के बन्धन में बाँधा जा सकता है।

आगे मन्त्र में कहा – अपनी उस अनुकूल बुद्धि, अनुकूल स्वभाव, अनुकूल प्रियाचरण से तु नः यज्ञं- हमारे इस गृहस्थ यज्ञ को पिपृहि - पूर्ण कर दे, उसे अपनी पालन शक्ति से पूर्णता प्रदान कर दे (पृ पालनपूरणयोः)। क्योंकि सकल जगत् का उत्पादक तो वह परमेश्वर है यह निश्चित ही है अतः हम तो केवल पालन ही कर सकते हैं।

अन्त में मन्त्र मे एक और बहुत प्यारा सम्बोधन नारी के लिये दिया विश्ववारे - तू विश्ववारा है। तु सबके द्वारा वरण करने योग्य है (वृञ् वरणे) है। अपनी ममता अपने स्नेह व प्यार से सबका आच्छादन करने वाली (वृञ् अच्छादने) है। तू परिवार के छोटे–बड़े सब जनों के दुखों का, कष्टों का, समस्याओं का निवारण करने वाली (वारयति) है। अतः तेरा नाम विश्ववारा है। यह सत्य है नारी जहाँ जिस भी क्षेत्र में होगी वहाँ दुःख, कष्ट, घरेलू छोटी–बड़ी समस्याएँ तो रहेगी ही नहीं। अतः वह सबके द्वारा वरणीय है।

एक सम्बोधन अभी और शेष है मन्त्र में कहा सुभगे! सुभगा है। तेरा भग सुखदायी है, तू सौभाग्यवती है। इसलिए मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू सुवीरं रयिं - अच्छे वीर पराक्रम से युक्त पुत्र रूप धन का हमारे लिये धेहि - धारण कर, और उसका पोषण भी कर (डुधाञ् धारण–पोषणयोः) क्योंकि उत्तम संस्कार देकर अच्छे पालन–पोषण के द्वारा सुसन्तान प्राप्ति की तू ही आधार है। वैदिक नारी अपने इस कर्त्तव्य का बोध अच्छी प्रकार करती थी, वह घर की व्यवस्था में गृह के संयोजन में तथा सन्तान के निर्माण में अपने अधिकार और दायित्व को समझती थी। इसीलिए वेद के शब्दों में वह अधिकारपूर्वक कहती थी–

अहं वदामि नेत् त्वं सभायामह त्वं वद।
ममेदसस्त्वं केवलो नान्यासां कीर्त्तयाश्चन।।

–(अथर्व. 7/39/4)

इस घर में अहं वदामि - मैं

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-02-2019 (pages 8) Posting Date : 2-3 Every Month Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2018-20

सेवा में,

शुद्धि समाचार

फरवरी – 2019

बोलती हूँ, मैं बोलूँगी नेत् त्वं - नू नहीं! कभी नहीं। हाँ सभा में बाहर सोयायटी में तू बोल तूझे जितना बोलना हो। साथ ही वेद के शब्दों में वह आगे सचेत करते हुए कहती है– तू बाहर जा रहा है जा! लेकिन ध्यान रखना तू केवल मेरा ही है। बाहर किसी ओर की पराई स्त्री का कीर्त्तन भी मत करना, नाम भी मत लेना। इस प्रकार नारी तो स्वयं पतिव्रता होती ही है उसे होना भी चाहिये पर पुरुष को भी छूट नहीं है, यह मन्त्र ने स्पष्ट कर दिया। पुरुष को भी एक पत्नीव्रत बनकर ही रहना है। किसी दूसरी स्त्री का नाम भी नहीं लेना है।

मन्त्र में नारी को सुभगा शब्द से सम्बोधित किया है। और समाज में विवाहित नारी को सौभाग्यवती भवः अखण्ड सौभाग्यवती भव का आशीर्वाद दिया जाता है। उसका सौभाग्य विवाह और पति के साथ जोड़ दिया जाता है। इसीलिये पति के मर जाने पर सुहाग के सौभाग्य के विवाहिता के जो चिह्न हैं बिन्दी, सिन्दूर और अन्य श्रृंगार आदि उनसे सदा के लिए उसे वंचित कर दिया जाता है। मानो पति ही उसका सौभाग्य था। लेकिन वेद के ही शब्दों में मैं एक अन्य बात कहना चाहती हूँ जिसमें किसी भी नारी को सदा सुहागिन कहा जा सकता है। वहाँ कहा है – वह नारी जो वेद विदुषी हो अध्यात्म पथ गमिनी हो उसका पति कभी भी जरसा - जीर्ण–शीर्ण होकर वृद्धावस्था के कारण नहीं मरता क्योंकि उसका पति तो स्वयं इन्द्र है परमात्मा है। वैसे तो परमेश्वर पालक होने से सभी का प्राणीमात्र का पति है भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् आदि मन्त्रों में यही कहा है। पर वह परम प्रभु जिसका आराध्य देव है प्राप्तव्य है ऐसी नारी कभी भी विधवा या सुहाग से हीन नहीं हो सकती। वेद के शब्दों में –

इन्द्राणीमासु नारिषु
सुभगामहमश्रवम्।
नह्यस्या अपरंचन जरसा मरते
पतिविश्वस्मादिन्द्र उत्तरः।।

–ऋ. 10/86/1)

इन सभी नारियों में उस नारी को मैंने सदा सौभाग्यवती सुना है जिसने अपना पति इन्द्र को बना लिया है। इन्द्र अर्थात् आत्मा अथवा परमात्मा। वहीं उसका आराध्य है प्राप्तव्य है। अतः वह कहती है मेरा पति इन्द्र तो विश्वस्मात् उत्तरः- संसार के सभी पुरुषों से उत्तम है श्रेष्ठ है।

इस प्रकार नारी के लिये पत्नी के लिये प्रयुक्त अनुमति सुप्रणीति विश्ववारा और सुभगा ये विशेषण वेदों में नारी कर्त्तव्य व अधिकार के व्यापक हैं। यज्ञ को पूर्ण करना व उसका पालन करने का दायित्व नारी पर है। यदि पुरुष समाज अपने अतिरिक्त बल के प्रयोग से इस वेदाज्ञा का उल्लंघन कर नारी के अधिकारों पर प्रहार करेगा तो समाज में अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार के साथ दुर्भिक्ष अकालमृत्यु और भय से युक्त दुर्दिन ही उसका परिणाम होगा। यह सुनिश्चित है। क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है–

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्य पूजा व्यतिक्रमः।
त्रीणि तत्र प्रवर्त्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्।।

–आचार्य नन्दिता शास्त्री
(पाणिनि प्रभा से आभार)

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वाधान में आयोजित

राष्ट्रीय वेद सम्मेलन

एवं

दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का

65 वां वार्षिकोत्सव

उद्घाटन समारोह
9 मार्च 2019, प्रातः 8 बजे

समापन समारोह
10 मार्च 2019, सायं 3 बजे

स्थान :- आर्य समाज मालवीय नगर, नई दिल्ली

आप सादर आमंत्रित हैं।

कार्यालय : दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, आर्य समाज मस्जिद मोठ, नई दिल्ली
vedsammelan2019@gmail.com, 9211501545, 9968264375, 9868403043

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 9711258445, 9718550459 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह–सम्पादकः डॉ. देवेश प्रकाश आर्य